1857 का आंदोलन

बाबू राम पँवार
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
राष्ट्रीय वीर गुर्जर महासभा
मो .नं .8958901114

1857 का आंदोलन इतना जबरदस्त था की उससे अंग्रेज संपूर्ण परास्त हो गए थे। अखंड भारत के निर्माण की होड़ में अग्रणी ब्रिटेन सैनिकों को नतमस्तक करने वाले एकमात्र गुर्जरों ने दिल्ली को आजाद करा दिया। दिल्ली में भारतीयों की विजय पराजय में पर्यंत हो गई। गुर्जरों के देहात के देहात विरान हो गए। अंग्रेजों ने अपने भक्तों की सहायता से गुर्जरों पर दमन चक्र चलाया। दिल्ली में चंद्रावल गांव के 22 गुर्जरों को फांसी दी गई और अनेकों को गोली से उड़ाया गया। चंद्रावल गांव को आग लगा दी गई। चंद्रावल के निकट पहाड़ी (रिज) पर अंग्रेजों ने अपनी विजय का स्मारक बनाया जो कि आज भी जीतगढ़ के नाम से मौजूद है। दिल्ली में ही फतेहपुर बेरी में 12 साल से ऊपर के हर व्यक्ति को कत्ल कर दिया गया। हरियाणा के सोहना और रिठौज के गुर्जरों को गोली से उड़ाया गया व फांसी दी गई।

1857 का स्वाधीनता संग्राम दबा दिए जाने के बाद देश के आम लोगों पर अंग्रेजों का दमन और भी बढ़ गया। बाद में अंग्रेजों ने इन लाखों बलिदानियों तथा उनकी संतानों पर क्रिमिनल ट्राइब्स एक्ट 1871, 1924 आदि लगाये। देश 1947 में आजाद हो गया था जबकि आज की विमुक्त जातियां वर्ग अधिकतर 31 अगस्त 1952 क्रिमिनल ट्राइब्स एक्ट हट जाने पर ही आजाद हुआ। आज का हरिद्वार, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, देहरादून, बिजनौर और मुरादाबाद के गुर्जर विमुक्त जाति में आते हैं यह वह इलाका है जहां 1922 में राजा विजयसिंह ने देश की आजादी का बिगुल बजा दिया था और ऐलान कर दिया था कि अंग्रेजों को अपने देश से बाहर निकाल दो। इसके अलावा भारतवर्ष में गुर्जरों को घुमन्तु श्रेणी में डालकर प्रतिबंधित कर दिया गया। वर्तमान में क्रिमिनल ट्राइब्स को डीनोटीफाइड जाति कहा जाता है । सर्वप्रथम क्रिमिनल ट्राइब्स शब्द का प्रयोग क्रिमिनल ट्राइब्स एक्ट 1871 में किया गया था। इस अधिनियम को 1887, 1911 और 1924 में सुधार के नाम पर और भी अधिक प्रभावी बनाया गया। क्रिमिनल ट्राइब्स एक्ट 1824 प्रांतीय सरकारों को अधिकार दे दिया गया कि जिला मजिस्ट्रेट किसी जाति या वर्ग को दण्डनीय अपराध में लिप्त समझता है तो वह उस व्यक्ति जाति या समूह को अपराधी जनजाति एक्ट 1924 के अंतर्गत अपराधी घोषित कर सकता है।

जिला मजिस्ट्रेट को यह अधिकार भी दे दिया गया कि वह ऐसे व्यक्तियों का ब्यौरा तैयार करके रजिस्टर में उनके नाम लिख कर रखेंगे। इन व्यक्तियों को लगातार पुलिस स्टेशन को सूचित करना होगा और अपनी उपस्थिति दर्ज करानी होगी। इस एक्ट के अधीन जिन बच्चों के बाप का नाम रजिस्टर में दर्ज है उनका यह दायित्व है कि वह 4 साल से बड़े बच्चों के नाम रजिस्टर (पुलिस स्टेशन) में दर्ज कराएं । रजिस्टर में दर्ज व्यक्तियों को कहीं भी आने जाने की पाबंदी होगी। यदि वह अपना पता बदलते हैं तो पुलिस को सूचित करना होगा, भले ही यह स्थान परिवर्तन कुछ घंटो के लिए ही क्यों ना हो। ऐसे सभी व्यक्तियों को किसी भी समय अपने फिंगर प्रिंट्स सरकारी रिकॉर्ड में देने होंगे। उंगलियों के निशान न देने पर ऐसे व्यक्तियों को दंडित किया जाएगा।

क्रिमिनल ट्राइब्स पर लगी धारा 23 भी उनको जानवरों के जीवन जैसा व्यतीत करने को बाध्य करती है। आईपीसी के अंतर्गत कानून तोड़ने पर एक नोट में सजा दी जा सकती है। (अ) दूसरा अपराध करने पर कम से कम 7 वर्ष की सजा। (ब) तीसरी बार या उससे अधिक अपराध करने पर जीवन भर के लिए काला पानी (देश निकाला) की सजा। सी.सी.पी. एक्ट 1898 के अधीन व्यक्तियों को बिना वारंट के गिरफ्तार किया जा सकता है।

अंग्रेज सरकार ने एक शताब्दी तक इन जातियों को अपराधी जनजातियों की श्रेणी में रखा। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सन 1952 में अपराधी जनजाति अधिनियम समाप्त कर दिया गया और उसकी जगह विमुक्त जातियों का दर्जा दिया गया और इनके विकास के मार्ग प्रशस्त किया गए।

आजादी के बाद भी भारत सरकार सहित कई राज्यों ने अभी भी अध्यासिक अपराधी अधिनियम के अंतर्गत अधिसूचित कर रखा है। इस बार विशेषकर विमुक्त जातियों को स्वतंत्रता सेनानी (जैसा सुप्रीम कोर्ट के पटल पर माना गया है) भी घोषित कर कराना चाहिए।

1857 आंदोलन के नायक थे कोतवाल धनसिंह गुर्जर

मेरठ गजेटियर के अनुसार 1857 की लड़ाई के शुरुआती नायक कोतवाल धनसिंह गुर्जर थे। कोतवाल धनसिंह गुर्जर ने ही क्रांतिकारियों का नेतृत्व किया था। 9 मई 1857 को रात में मेरठ और आसपास के गांव में अंग्रेजों पर हमला करने की योजना की खबर फैला दी गई थी। 1857 में धनसिंह गुर्जर मेरठ के कोतवाल थे। कोतवाली के पीछे लिसाड़ी गेट गुर्जर वाड़े का मुख्यद्वार था। कोतवाल धनसिंह गुर्जर ने 10 मई को जेल का दरवाजा खोल कर क्रांति की शुरुआत कराई इसके बाद लोग हथियार लेकर फिरंगियों के खात्मे के लिए निकल पड़े।

मेरठ गजेटियर के अनुसार 10 मई को गिरजाघर का घंटा बजने के साथ ही मारकाट शुरु हो गई थी। खजाने, शस्त्रागार और महत्वपूर्ण ठिकानों पर कब्ज़ा कर लिया गया था। मेरठ से अंग्रेजों का पूरी तरह सफाया करने के बाद क्रांतिकारी दिल्ली चलो के नारे लगाते दिल्ली की तरफ रवाना हुए थे।

आज़ादी की पहली लड़ाई में मेरठ और आसपास के लोगों के शामिल होने पर अंग्रेजी हुकूमत ने दमन चक्र चलाया। सीकरी गांव में 100 लोगों को मार डाला। गांव फूकने के बाद 30 आदमियों को पेड़ पर लटका फांसी दी गई। पांचाली और नंगली गांव के अधिकांश लोगों को कत्ल कर दिया गया। 46 लोग बंदी बनाए गए। जिनमें 40 को फांसी दी गई। मेरठ के भैसाली मैदान का तालाब लाशों से पाट दिया गया। आज इस स्थान पर क्रांतिकारियों की याद में स्मारक बना हुआ है।

दादरी के क्रांतिकारी गुर्जर

बुलंदशहर और गाजियाबाद के बीच डिस्ट्रिक्ट दादरी एक ऐसा बलिदानी स्थल है, जहां के लोगों ने अंग्रेजी साम्राज्यवाद से जमकर लोहा लिया। अंग्रेजो की सेना और भरपूर संसाधन भी इस क्षेत्र के वीर गुर्जरों को अपने कर्तव्य पथ से डिगा नहीं सके। अंग्रेजी हुकूमत से टकराने का परिणाम खून खराबा, संपत्ति जब्ती और खुलेआम फांसी ही थी। इसी के चलते आजादी की मशाल थाम अंग्रेजों को खदेड़ने का प्रयास करने वाले बिशनसिंह और भगत सिंह को फांसी मिली, 11 लोगों को गोली से उड़ा दिया गया और ना जाने कितने लोगों को अंग्रेजों ने तोप में झोंककर भस्म कर दिया।

दादरी, जो वर्तमान में गौतम बुद्ध नगर जिले की एक प्रमुख तहसील है, किसी जमाने में एक छोटा सा गांव था। इसे गुर्जरों ने आबाद किया। दिल्ली की मुग़ल सल्तनत कमजोर हो चुकी थी और दादरी एवं इसके आस पास बसे गांव में भाटी गुर्जरों का ही दबदबा था। मुगल बादशाह के चतुर वजीर नजीबुद्दौला ने इस क्षेत्र में सल्तनत के हितों को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से ही इलाके के मशहूर शंभू सिंह के बेटे दरगाही सिँह को राव का खिताब दिलवाया और उनको राव की पदवी के साथ 113 गांवों की मुकर्ररी सनद भी लिख दी। इसी कारण वे अपने को राजा मानते थे हालांकि वे कटेहरा गांव के थे, पर राव बनने पर वह स्थाई रूप से दादरी में रहने लगे। उन्होंने यहीं किला बनवाया, बाजार, कचहरी, सराय का निर्माण कराया। इस प्रकार दादरी गांव के स्थान पर दादरी कस्बे के रूप में परिवर्तित हो गया।

अंग्रेजों के हाथ में असली सत्ता जाने पर भी अंग्रेजों ने राव दरगाह सिंह के ओहदे व अधिकारों में कटौती नहीं की, बल्कि 113 गांव की मुकर्ररी सनद उनके लिए आजीवन कर दी। 1849 में राव का इंतकाल होने पर अंग्रेजों ने मुकर्ररीदारी वापस ले ली। राव का उत्तराधिकार छोटे बेटे रोशन सिंह को मिला। अंग्रेजों ने ₹500 की मासिक पेंशन मंजूर कर इन 113 गांवों को मिलाकर अलग परगना बना दिया।

अंग्रेजों का निर्णय वीर व स्वाभिमानी गुर्जरों को पसंद नहीं आया। मई 1857 में जब स्वतंत्रता संग्राम की चिंगारी पूरे मेरठ, दिल्ली, अलीगढ़ क्षेत्र में फूटी तो पेंशनर राव रोशनसिंह के दोनों बेटे बिशनसिंह, भगवतसिंह और उनके भाई आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। दनकोर-चिटहेरा के गुर्जरों ने भी इस आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया। 10 मई 1857 को मेरठ से आंदोलन शुरु होते ही दादरी के गुर्जरों ने अंग्रेजों एवं उनके वफादारों को सबक सिखाना शुरु कर दिया था।

अंग्रेजों ने बदले की भावना से जुल्म किए, गांव को लूटा गया। अंग्रेज सेना पहले गांव में लूटपाट करती और फिर आग लगा कर आगे बढ़ जाती। कर्नल ग्रीथेड ने भी 20 सितंबर 1857 को दादरी के आस-पास के गांव में आगजनी कराते हुए सैनिकों से लूटपाट भी कराई। मई 1857 में कटहेरा के देशभक्त उमराव सिंह ने तो अपने को राजा घोषित कर दिया था। बाद में अंग्रेजों ने उमराव सिंह को भी फांसी पर लटका कर प्रतिशोध पूरा किया।

बुलंदशहर के तत्कालीन कलेक्टर मिस्टर साप्टे ने जो मई 2857 में क्रांति शुरु होते ही मेरठ भाग गए थे, अपनी रिपोर्ट में दादरी एवं आसपास के गुर्जरों के गांवों के बागी होने की चर्चा करते हुए लिखा है कि आस-पास के गुर्जरों का अफसर उमराव सिंह है और दनकौर के गुर्जरों का नेतृत्व में राजपुर के सुरजीतसिंह के हाथों में है । 1874 में बुलंदशहर के डिप्टी कलेक्टर कुंवर लक्ष्मणसिंह ने 1857 की घटना को लिपिबद्ध किया जिसमें कहा गया है कि अंग्रेजी हुकूमत ने 11 गुर्जरों को भी फांसी पर लटकवा दिया था। उमरावसिंह, राव रोशनसिंह, सुरजीतसिंह की जायदाद जब्त की गई। दादरी के इलाके को अंग्रेजों ने सबसे बड़ा गड़बड़ी वाला इलाका माना था। क्रांति की ज्वाला दब जाने पर भी इलाके को दंड देने की गरज से अंग्रेज सरकार ने विकास कार्य ठप कर दिए। परिणाम स्वरुप यह क्षेत्र बुरी तरह पिछड़ गया। अत्याचार, दमन सहने, संपत्ति जप्त हो जाने के बावजूद इलाके के गुर्जरों का उत्साह कम नहीं हुआ और वह आजादी के लिए संघर्ष करते रहे।

क्रांतिवीरों की शहादत का साक्षी है

पुरकाजी का सूली वाला बाग

पुरकाजी का सूली वाला बाग जंगे आजादी के दौरान भारत माता की जय के साथ हंसते-हंसते फांसी का फंदा चूमने वाले जनपद के शहीदों की शहादत की आज भी मौन गवाही दे रहा है। इस बाग में लगभग 500 लोगों को फांसी दी गई। जिनमें पुरुषों के साथ महिलाएं भी शामिल थी। जिले का सबसे बड़ा यह शहीद स्मारक आज भी उपेक्षा का शिकार है।

अंग्रेजों की फौलादी जंजीरों से जकड़ी भारत माता की बेड़ियां काटने को देश व प्रदेश के दूसरे स्थानों की तरह जनपद मुजफ्फरनगर का अपना एक गौरवशाली इतिहास है, जिस पर आज की पीढ़ी को गर्व करना स्वाभाविक ही है। मेरठ और अवध की तरह 1857 के मई माह में मुजफ्फरनगर के स्वतंत्रता सेनानियों ने गौरी हुकूमत को लोहे के चने चबाने को मजबूर कर दिया था। पूरा जिला क्रांति की चपेट में आ चुका था। हालात बिगड़ते देख कर तत्कालीन ब्रिटिश प्रशासक वरफोर्ड ने 29 मई को मेरठ जाकर अपने प्राण बचाने का प्रयास किया था। जिला अंग्रेजों के चंगुल से मुक्त होने के बाद उस समय ऐसा प्रतीत होने लगा था कि यहां अंग्रेजों का कोई शासन ही नहीं रहा। बाद में 1 जुलाई 1857 वरफोर्ड के स्थान पर मिस्टर एडवर्ड्स इस जिले के सर्वोच्च प्रशासनिक अधिकारी नियुक्त हुए। उन्होंने गोरखा सैनिकों की मदद से मई माह में जनपद में पनपी बगावत(आजादी) की आंधी को रोकने के लिए प्रयास शुरू किए। मुजफ्फरनगर के गुर्जरों, पठानों और सैयदों ने इस संघर्ष में सबसे आगे बढ़कर कुर्बानियां दी, जिन्हें कभी भुलाया नहीं जा सकता। मुजफ्फरनगर शहर, शामली, थानाभवन, परासौली, बुढाना आदि स्थान इस क्रांति के केंद्र थे। इसमें शामली प्रमुख केंद्र था। मुजफ्फरनगर में मोहरसिंह के नेतृत्व में क्रांति हुई। शामली के मोर्चे पर ही शाहवली उल्लाह, तत्कालीन इमाम हाजी हमीदुल्ला एवं हाफिज मोहम्मद आमिर और उनके साथियों ने यहाँ अपने जोहर दिखाएं। थाना भवन के काजी महबूब अली व इनायत अली ने हमला करके शामली तहसील को लूटा तथा तहसीलदार और उसके 100 से अधिक साथियों का कत्ल कर डाला। शामली की लड़ाई इस क्षेत्र की महत्वपूर्ण लड़ाइयों में से एक है। परासौली में खैराती खां के नेतृत्व में क्रांति हुई और उसकी लपटें बुढ़ाना तक फैली।

पूरे जनपद में फैली क्रांति की लपटों को दबाने के लिए अंग्रेज शासकों ने भयंकर अत्याचार किए। इस संघर्ष में पुरुषों के साथ महिलाएं भी पीछे नहीं रही। मई 1857 से सितंबर 1857 के बीच जनपद में लगभग 500 लोगों को फांसी दी गई। महिलाओं ने संगठित होकर आशादेवी गुर्जर महिला के नेतृत्व में अंग्रेजों का कड़ा मुकाबला किया।अधिकांश वीरगति को प्राप्त हुई और पकड़ी गई महिलाओं को फांसी पर चढ़ा दिया गया। दमन चक्र चलने पर शामली तथा अन्य स्थानों पर सैकड़ों लोगों को फांसी लगाकर पेड़ पर लटकाया गया। शामली के एक मौहल्ले का नाम ही जालिमगढ़ पड़ गया। थानाभवन के काजी परिवार को खत्म कर दिया गया था तथा खैराती खाँ और उनके साथियों को पकड़कर फांसी पर लटका दिया गया। कड़े मुकाबले के बाद अंग्रेजों का क्रांति से आजाद हुए स्थानों पर पुनः कब्जा हो गया।

मुजफ्फरनगर शहर पर कब्जा करने में अंग्रेजो के छक्के छूट गए। इसमें गोरखा एवं सिखों की पर्याप्त सेना साथ में होते हुए भी अंग्रेजों को मुंह की खानी पड़ी। मुजफ्फरनगर में स्थिति संभालने के बाद शामली, बुढाना, परासौली तथा थाना भवन आदि स्थानों पर एडवर्ड्स कठिनता से अंग्रेजी सत्ता के पुनः पैर जमा सके। इस प्रकार 1857 की क्रांति में अंग्रेजों के चंगुल से निकल चुके जनपद में पुनः अपना अधिकार जमाने के लिए अंग्रेजों को काफी संघर्ष और कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इस प्रकार सितंबर 1857 के अंत तक जिले में अंग्रेजों ने बर्बरतापूर्ण अत्याचार किए।

क्रांतिवीरों द्वारा भारत माता की आजादी को हंसते-हंसते अपने प्राणों की बाजी लगा देने की गौरव गाथा का आज भी मौन गवाह है पुरकाजी का सूली वाला बाग। इस बाग में अंग्रेज हुक्मरानों ने जंगे आजादी के दीवानों को

पेड़ों पर लटका कर फांसी दी। पुरकाजी कस्बा और इसके आसपास गुर्जर रियासतों के लोगों ने दिल्ली की मुगलिया सल्तनत के आखिरी बादशाह बहादुरशाह जफर के झंडे के नीचे संगठित होकर बगावत कर स्वर बुलंद किया था। इन बागी स्वरों को दबाने के लिए सैकड़ों लोगों को अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ी। 51 वर्षीय शोभाराम त्यागी को जमीन में गाडकर कुत्तों से फड़वाया गया।

वैसे तो लगभग 500 लोगों को फांसी के फंदे पर चढ़ाया गया, पर खोजबीन के बाद 12 महिलाओं समेत 70 शहीदों के नाम पते की अधिकृत जानकारी मिल सकी है।

इन महान सेनानियों की कुर्बानियों से भारत 15 अगस्त 1947 को आजाद हुआ पर विडम्बना ही है कि आजाद भारत में सत्ता की रेवड़ियों के बंदरबाट में लगे पक्ष और विपक्ष के नेता इन शहीदों की शहादत से कोई प्रेरणा लेना नहीं चाहते।

सहारनपुर में अंग्रेजो के खिलाफ हथियार उठाने की पहल सिपाहियों ने नहीं जनता ने की थी

1857 का दिन यानि अंग्रेजों के पांव उखाड़ने के लिए जनक्रांति का दिन। मेरठ छावनी में स्थित भारतीय सैनिकों ने अंग्रेजों के विरुद्ध बगावत का जो बिगुल बजाया था उसकी गूंज से मदमस्त होकर सहारनपुर के हजारों लोग फिरंगियों से देश को मुक्त कराने के लिए सड़कों पर निकल आए थे। परिणाम मौत के रूप में सामने आया हो लेकिन स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास आजादी के मतवालों ने लिखा वह आज भी रोंगटे खड़े कर देने वाला है।

सहारनपुर नगर के बीचो-बीच स्थित लोहा बाजार का पीपल का पेड़ आज भी अंग्रेजों के उस घिनौने कारनामें की याद दिलाता है जिस पर अनेक लोगों को लटकाकर मौत की नींद सुला दिया गया था। इस पेड़ के सामने ही स्थित पुरानी कोतवाली अब तक एक रिहायशी रूप ले चुकी है लेकिन इतिहास के पन्ने बता रहे हैं कि कोतवाली में बैठकर अंग्रेज अफसर मौत का नजारा लिया करते थे।

1857 के अमर शहीदों की याद में जो स्मारक लोहा बाजार में बना है वह युवाओं के लिए जहां प्रेरणा स्रोत है वही उन बड़े बुजुर्गों के लिए एक पर एक समान हैं जिन्होंने आजादी की लड़ाई में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया था।

1857 का विद्रोह चर्बी वाले कारतूसों से शुरू हुआ था। मेरठ में स्थित तीसरी केवलारी से इस बगावत के साथ शुरू हो गया था, भारत की स्वतंत्रता का वह संग्राम जिसने अंग्रेजी साम्राज्य को झकझोर कर रख दिया था। देश के अन्य भागों की तरह सहारनपुर जिले में स्पष्ट रुप से एक बेचेनी और उन्माद का वातावरण बना था। जॉर्ज हार्वे ने जिन चपातियों का उल्लेख किया है वह सहारनपुर भी पहुंची थी और इन पार्टियों ने यहां के लोगों के हृदय में अंग्रेजों के प्रति नफरत की आग को तो सुलगाया ही उन्हें कुछ करने की प्रेरणा भी दी। मई 1857 के प्रारंभ प्रारंभ में ही हिंदुस्तानी सिपाहियों का व्यवहार बदलने लगा था। विद्रोह की चिंगारी उनकी आंखों में भरी थी परंतु सहारनपुर में अंग्रेजो के विरुद्ध हथियार उठाने की पहल सिपाहियों ने नहीं बल्कि जनता ने की थी यह जन क्रांति का एक सूचक था।

मेरठ में विद्रोह के हो जाने का समाचार जैसे ही सहारनपुर पहुंचा इस खबर से अंग्रेज इतना डर है कि यहां के मजिस्ट्रेट राबर्ड स्पेन की ने अंग्रेजी स्त्रियों और बच्चों को पहाड़ी स्टेशन मंसूरी भेजने का निर्देश दे डाला था। मेरठ में विद्रोह की शुरुआत होते ही सहारनपुर जिले में गुर्जरों तथा रांगड़ों ने फिरंगियों और उनके आश्रित जमीदारों और महाजनों पर आक्रमण का ऐसा सिलसिला प्रारंभ किया की समस्त सरकारी तंत्र आतंकित हो उठा। एक के बाद

दूसरा गांव विद्रोह करता चला गया। देश की स्वतंत्रता के इस प्रथम संग्राम में सहारनपुर जिले में सर्वप्रथम गुर्जरों ने हथियार उठाए । इस बावत सर हेनरी इलिएट ने लिखा था कि गुर्जरों ने उत्तर पश्चिमी भारत के मेरठ डिवीजन में 1857 के विद्रोह में खास उपद्रव किए' हम लोगों को तकलीफ पहुंचाई। देहातों में हमारे खिलाफ सिर्फ गुर्जर और रंग ही थे जिन्होंने कहीं हमारे पांव ना टिकने दिए।

नकुड कस्बे की जनता और उसके आस-पास के गांव ने इस क्रांति में अंग्रेजों को खुली चुनौती दी। यह पूरा का पूरा कस्बा सरकार के लिए सिरदर्द बना रहा। रॉबर्टसन मैं जब सैनिक लेकर कुछ किया तो उन्होंने देखा कि तहसील और थाने से आग की लपटें उठ रही है। तब उन्होंने पड़ोस के गांव की ओर कूच किया, सबसे पहले उन्होंने गुर्जरों के गांव फतेहपुर पर हमला किया। पूरे गांव को जला डाला गया। कुछ लोगों को गिरफ्तार करके यह लोग अपने कैंप में ले आए। रात में पड़ोस के गांव के लोगों ने कैंप को घेर लिया और नगाड़े बजाकर अंग्रेजों को चुनौती देते रहे। गुर्जरों ने घेरा बंदी कर अंग्रेजों पर गोली चलानी शुरू की लेकिन आधुनिक हथियारों से लैस और पूर्ण प्रशिक्षित सैनिक अफसरों का वह अधिक देर तक मुकाबला न कर पाए सेट से अधिक गुर्जरों ने यहां अपने देश के सम्मान के लिए जान देदी।

गुर्जर और रंगों की तरह इस देश के बंजारों ने भी देश की स्वतंत्रता की लड़ाई में भरपूर हिस्सा लिया और अपने प्राणों की आहुति देकर इतिहास में अपने को अमर कर दिया। बंजारों के वीरतापूर्ण कार्य का उल्लेख अंग्रेज अधिकारियों के पत्रों व रिपोर्टरों में भी मिलता है। यह बंजारे फुटवा गांव में इकट्ठा होकर अंग्रेजों पर हमला करने की योजना बनाते थे। उन्होंने अंग्रेजी फौज हो व उनके हथियारों का मुकाबला करने के लिए रेट और मिट्टी के अवरोध भी खड़े किए। कैप्टन रॉबर्टसन आजादी के मतवालों को कुचलने की हर रणनीति बनाई । देवबंद के पास बनेड़ा गांवों को महज इसलिए जलाकर खाक कर दिया गया क्योंकि उसमें गुजर बसते थे। सहारनपुर जिले के गुर्जरों से अंग्रेज इतना ज्यादा जुड़े थे कि जहां भी उन्हें गुर्जरों के रहने की सूचना मिली उसी गांव को उन्होंने आग के हवाले कर दिया राबर्टसन व कैप्टन रीड में देवबंद में 45 व्यक्तियों को फांसी पर चढ़ा कर मार डाला था। स्पेन की, राबर्टसन,वायस रंज्जन व कैप्टेन रीड ने जिले की जनता को आतंकित कर भरसक यह प्रयास किया कि वह स्वतंत्रता की लड़ाई से दूर रहें लेकिन राज्य एवं उनके अत्याचार बढ़ते गए जिले की जनता दुगने उत्साह से आगे आती रही।

देवबंद और अंकुर की तरह है रुड़की तहसील भी क्रांति के प्रभाव से बची नहीं थी। रुड़की अंग्रेजो के लिए किन कारणों से महत्वपूर्ण था। यहां प्रसिद्ध थामसन इंजीनियरिंग कॉलेज था। इसके अलावा सूचना प्रसारण का यह महत्वपूर्ण केंद्र था। पंजाब में शांति बनाए रखने के लिए रूट की और सहारनपुर में शांति व्यवस्था बनाए रखना आवश्यक था। इसी कारण राबर्टसन बराबर रुड़की पर निगाहें रखे हुए था। 1857 में उसने वहां की व्यवस्था को बेहद सुदृढ भी किया रुड़की में रहने वाले सभी अंग्रेजों को वर्कशॉप में पहुंचा दिया गया था और उसकी किला बंदी कर दी गई थी परंतु यह सारी व्यवस्था सैनिकों को विद्रोह करने से रोक पाई।

फिल्म जो के खिलाफ खड़े होने वालों में न्यू के बलिदान को भी भुलाया नहीं जा सकता। देसी सिपाहियों के दिलों में अंग्रेजों के प्रति नफरत भरी थी। मेरठ के देसी सैनिकों का अनुसरण करते हुए रुड़की में विद्रोह का झंडा उठा। गोलियां चलाते हुए सिपाहियों ने फिरंगियों के खिलाफ अपनी बगावत का ऐलान किया। सबसे पहले उन्होंने कैप्टन पर गोलियां चलाई परंतु वह बच निकला।

1857 के संग्राम में जान देने वाले सहारनपुर के वीर गुज्जर, रांगड़, बंजारे पुणे के प्रतीक है जिन्होंने अपनी कुर्बानी देकर अंग्रेजों के पाव उखाड़ने की शुरुआत की। लोहा बाजार में उस पीपल व पिलखन के पेड़ को बड़े बुजुर्ग आज तक भूले नहीं हैं जिस की शाखाएं आपस में मिली थी। इन पेड़ोंके ठीक सामने ही पुरानी कोतवाली स्थित थी। बताया जाता है की नगर के लोगों को आतंकित और उनमें उभरती चिंगारी को दबाने के लिए अंग्रेज इसी कोतवाली में बैठकर अंग्रेजों के मतवालों को पेड़ों पर टांगकर मस्करी किया करते थे पेड़ों पर टंगे और आजादी के दीवाने आखिर तक अंग्रेजो के सामने न झुके दूसरों के सबक सिखाने के लिए कहीं-कहीं दिनों तक पेड़ों पर शव लटकाए रखे गए। पुरानी कोतवाली के अलावा चौकी सराय पर भी अनेक क्रांतिकारियों को पेड़ पर लटका कर फांसी दी गई। शहीद गंज बाजार का नाम इन्हीं शहीदों की याद में रखा गया है। शहीदों की स्मृति में लोहा बाजार में पीपल के नीचे झांसी की रानी लक्ष्मी बाई की प्रतिमा आज भी स्थापित है।

यह गद्यांश गुर्जरों का सम्पूर्ण इतिहास खण्ड -1 गुर्जरों की उत्पत्ति एवं विस्तार से लिया गया है, जिसके लेखक श्री खुर्शीद भाटी जी हैं ।

****